दादी का गीत

लेखनः बारबरा सोरोस

चित्रः जैकी मॉरिस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

दादी का गीत

लेखनः बारबरा सोरोस

चित्रः जैकी मॉरिस

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

दादी का गीत
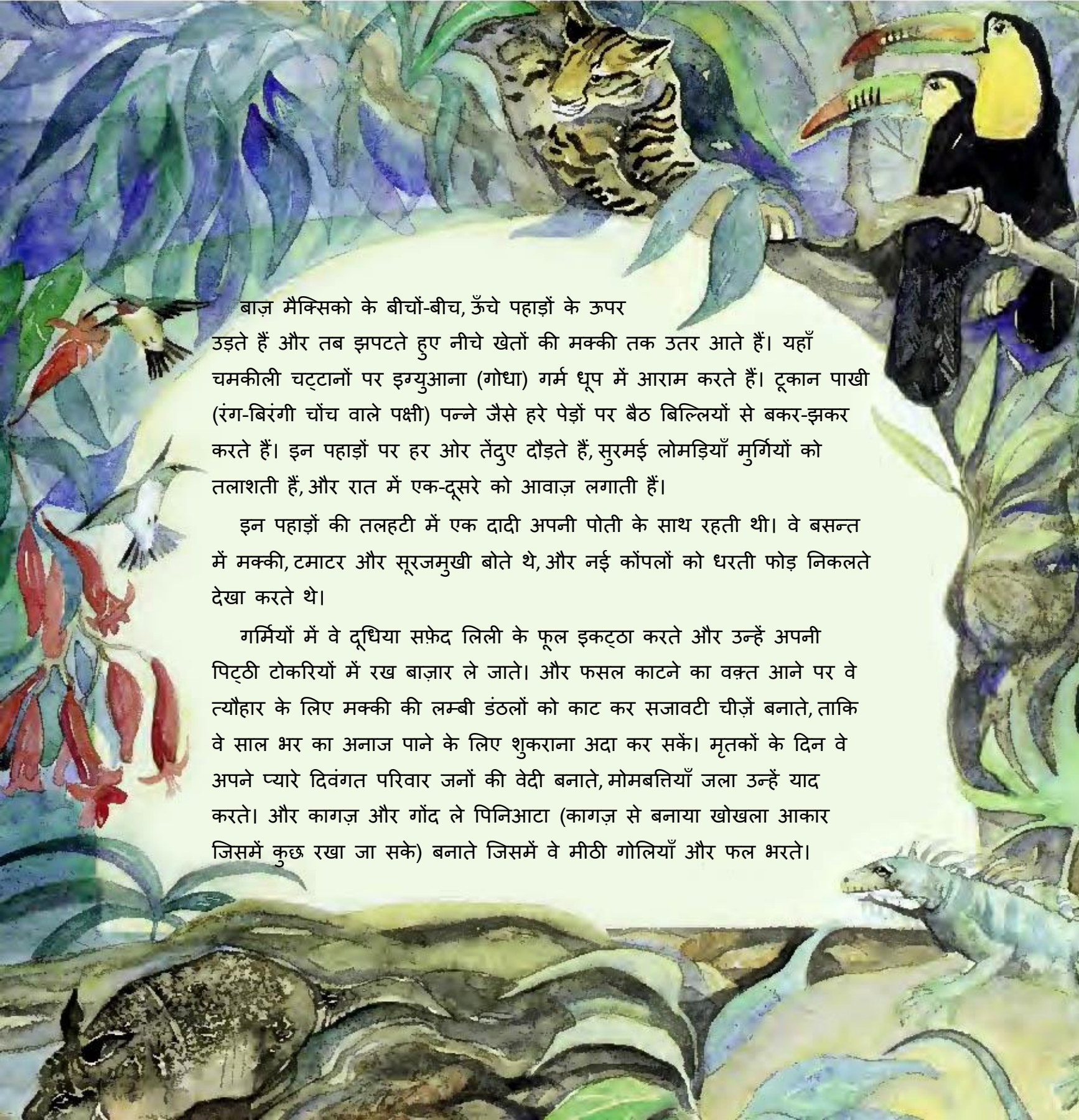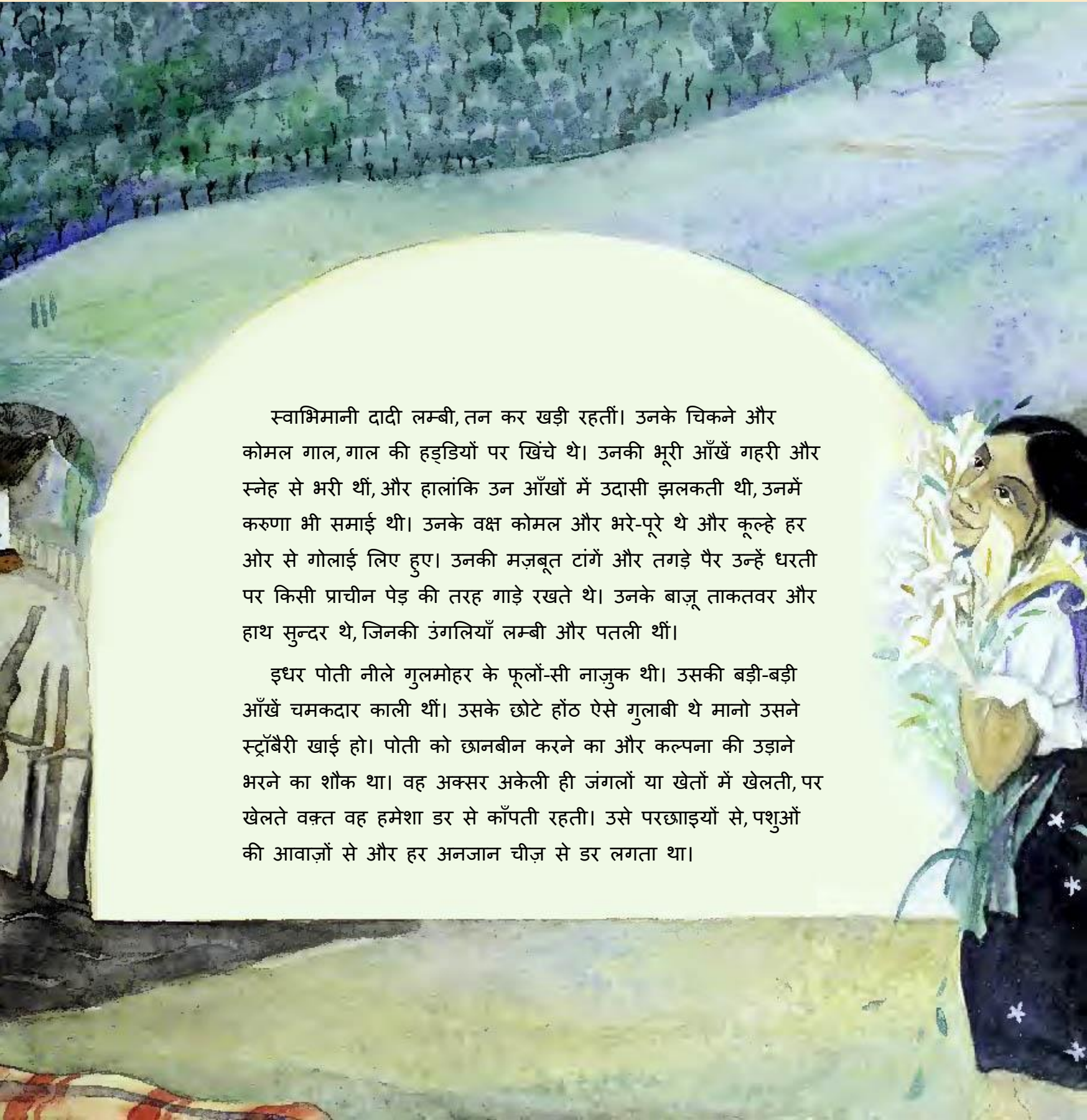
बाज़ मैक्सिको के बीचों-बीच, ऊँचे पहाड़ों के ऊपर उड़ते हैं और तब झपटते हुए नीचे खेतों की मक्की तक उतर आते हैं। यहाँ चमकीली चट्टानों पर इग्युआना (गोधा) गर्म धूप में आराम करते हैं। टूकान पाखी (रंग-बिरंगी चोंच वाले पक्षी) पन्ने जैसे हरे पेड़ों पर बैठ बिल्लियों से बकर-झकर करते हैं। इन पहाड़ों पर हर ओर तेंदुए दौड़ते हैं, सुरमई लोमड़ियाँ मुर्गियों को तलाशती हैं, और रात में एक-दूसरे को आवाज़ लगाती हैं।

इन पहाड़ों की तलहटी में एक दादी अपनी पोती के साथ रहती थी। वे बसन्त में मक्की, टमाटर और सूरजमुखी बोते थे, और नई कोंपलों को धरती फोड़ निकलते देखा करते थे।

गर्मियों में वे दूधिया सफ़ेद लिली के फूल इकट्ठा करते और उन्हें अपनी पिट्ठी टोकरियों में रख बाज़ार ले जाते। और फसल काटने का वक़्त आने पर वे त्यौहार के लिए मक्की की लम्बी डंठलों को काट कर सजावटी चीज़ें बनाते, ताकि वे साल भर का अनाज पाने के लिए शुकराना अदा कर सकें। मृतकों के दिन वे अपने प्यारे दिवंगत परिवार जनों की वेदी बनाते, मोमबत्तियाँ जला उन्हें याद करते। और कागज़ और गोंद ले पिनिआटा (कागज़ से बनाया खोखला आकार जिसमें कुछ रखा जा सके) बनाते जिसमें वे मीठी गोलियाँ और फल भरते।
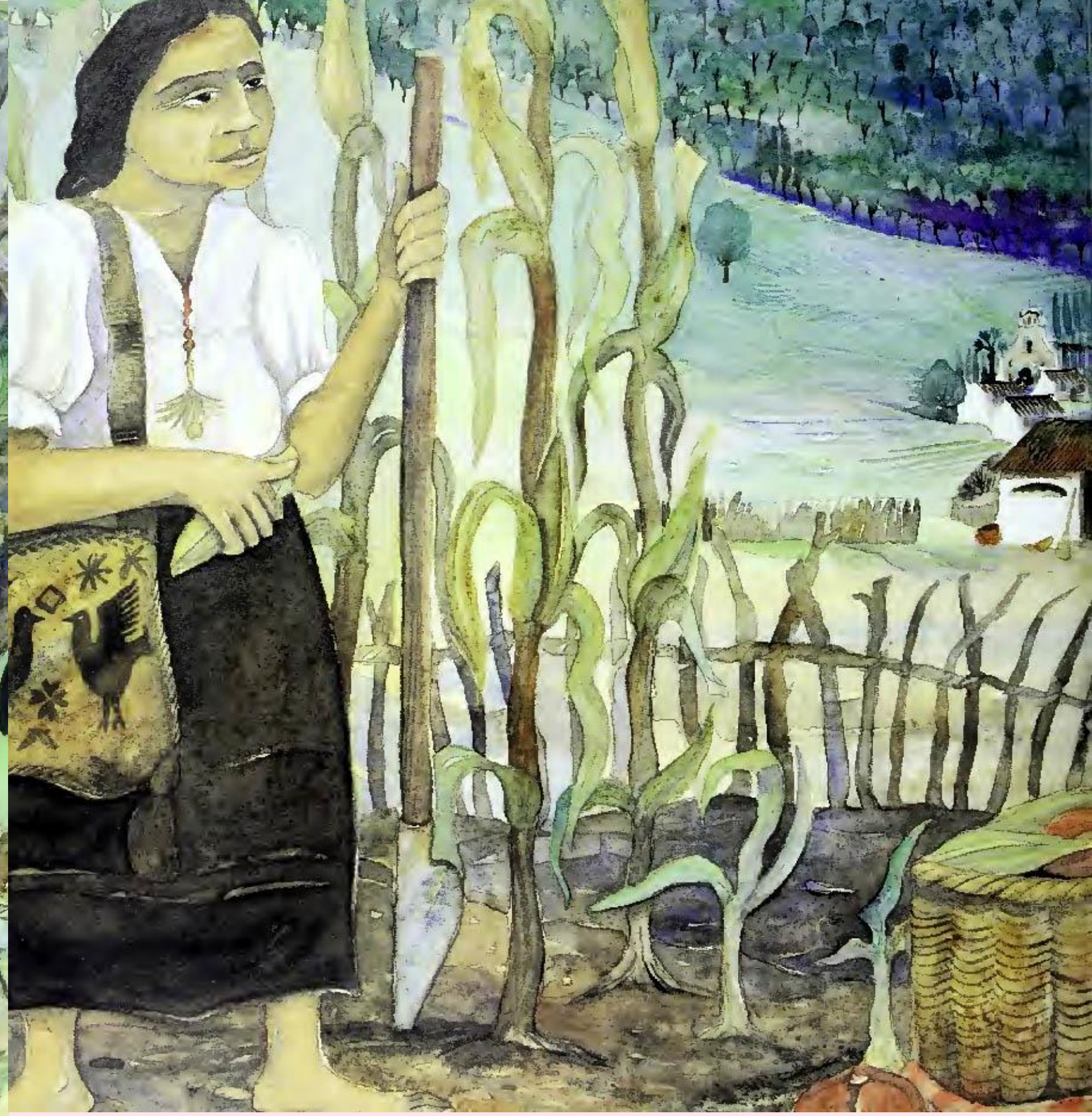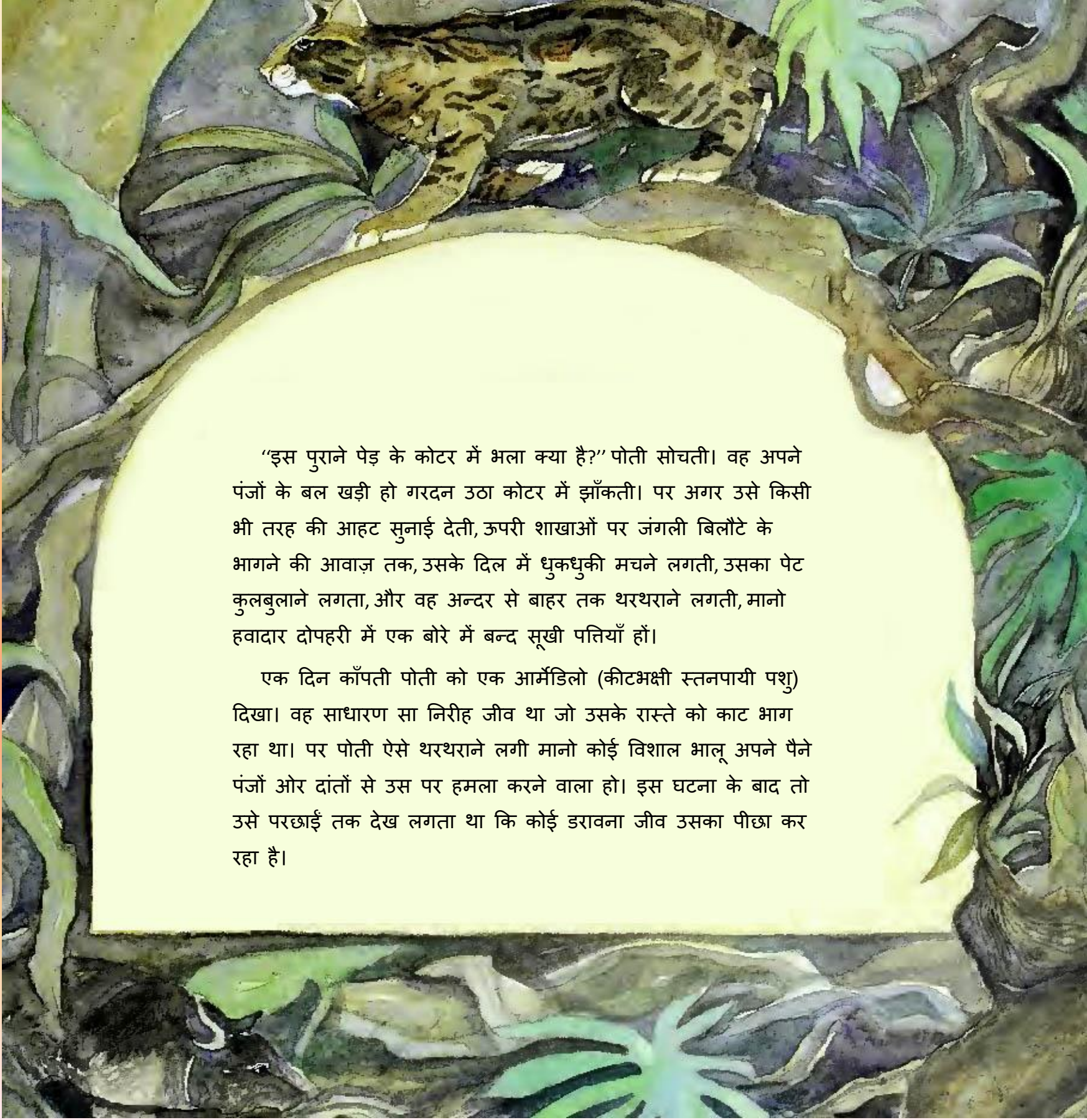
स्वाभिमानी दादी लम्बी, तन कर खड़ी रहतीं। उनके चिकने और कोमल गाल, गाल की हड्डियों पर खिंचे थे। उनकी भूरी आँखें गहरी और स्नेह से भरी थीं, और हालांकि उन आँखों में उदासी झलकती थी, उनमें करुणा भी समाई थी। उनके वक्ष कोमल और भरे-पूरे थे और कूल्हे हर ओर से गोलाई लिए हुए। उनकी मज़बूत टांगें और तगड़े पैर उन्हें धरती पर किसी प्राचीन पेड़ की तरह गाड़े रखते थे। उनके बाज़ू ताकतवर और हाथ सुन्दर थे, जिनकी उंगलियाँ लम्बी और पतली थीं।

इधर पोती नीले गुलमोहर के फूलों-सी नाज़ुक थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमकदार काली थीं। उसके छोटे होंठ ऐसे गुलाबी थे मानो उसने स्ट्रॉबैरी खाई हो। पोती को छानबीन करने का और कल्पना की उड़ाने भरने का शौक था। वह अक्सर अकेली ही जंगलों या खेतों में खेलती, पर खेलते वक़्त वह हमेशा डर से काँपती रहती। उसे परछाइयों से, पशुओं की आवाज़ों से और हर अनजान चीज़ से डर लगता था।
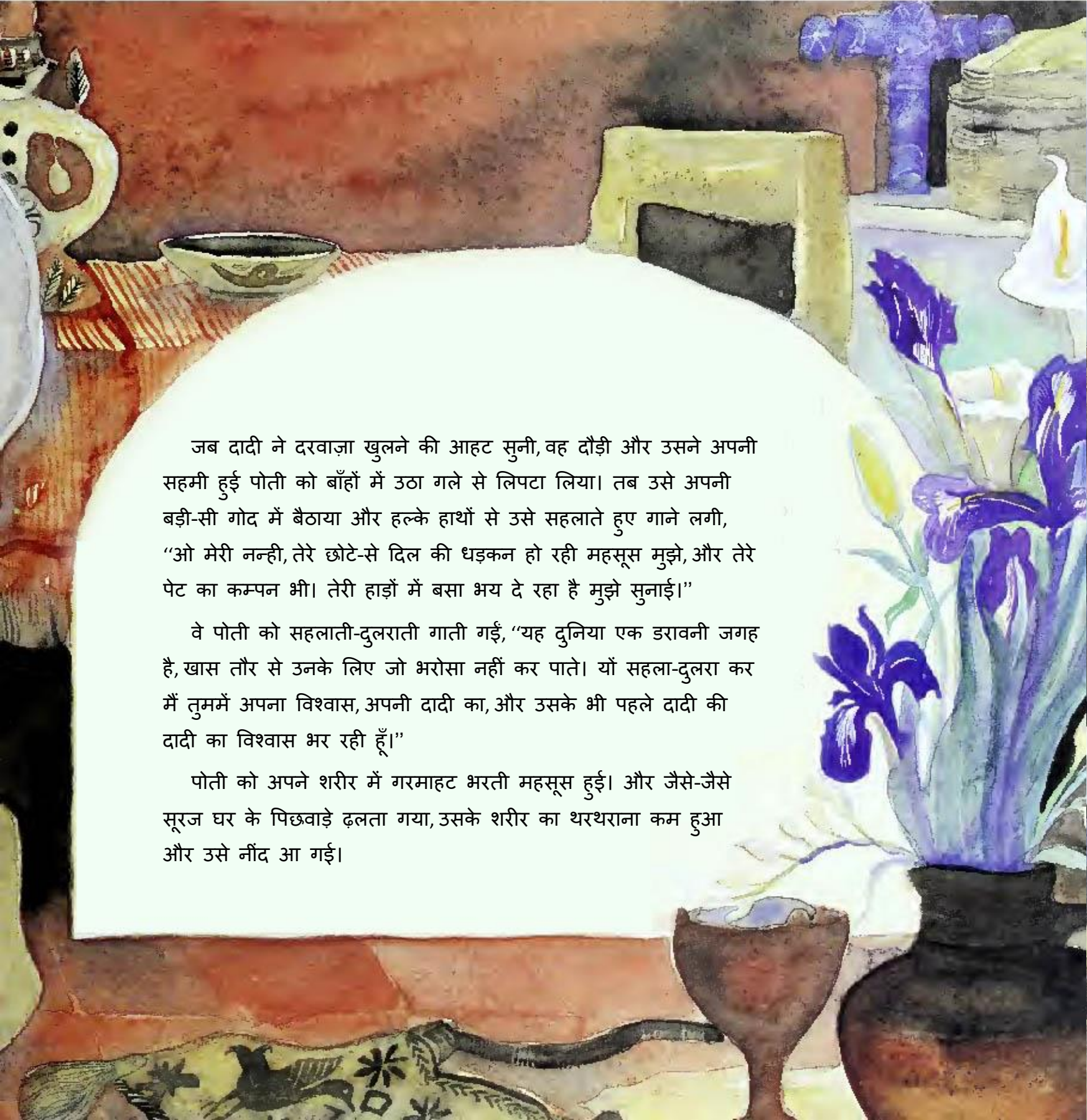
"इस पुराने पेड़ के कोटर में भला क्या है?" पोती सोचती। वह अपने पंजों के बल खड़ी हो गरदन उठा कोटर में झाँकती। पर अगर उसे किसी भी तरह की आहट सुनाई देती, ऊपरी शाखाओं पर जंगली बिलौटे के भागने की आवाज़ तक, उसके दिल में धुकधुकी मचने लगती, उसका पेट कुलबुलाने लगता, और वह अन्दर से बाहर तक थरथराने लगती, मानो हवादार दोपहरी में एक बोरे में बन्द सूखी पत्तियाँ हों।

एक दिन काँपती पोती को एक आर्मेडिलो (कीटभक्षी स्तनपायी पशु) दिखा। वह साधारण सा निरीह जीव था जो उसके रास्ते को काट भाग रहा था। पर पोती ऐसे थरथराने लगी मानो कोई विशाल भालू अपने पैने पंजों ओर दांतों से उस पर हमला करने वाला हो। इस घटना के बाद तो उसे परछाईं तक देख लगता था कि कोई डरावना जीव उसका पीछा कर रहा है।
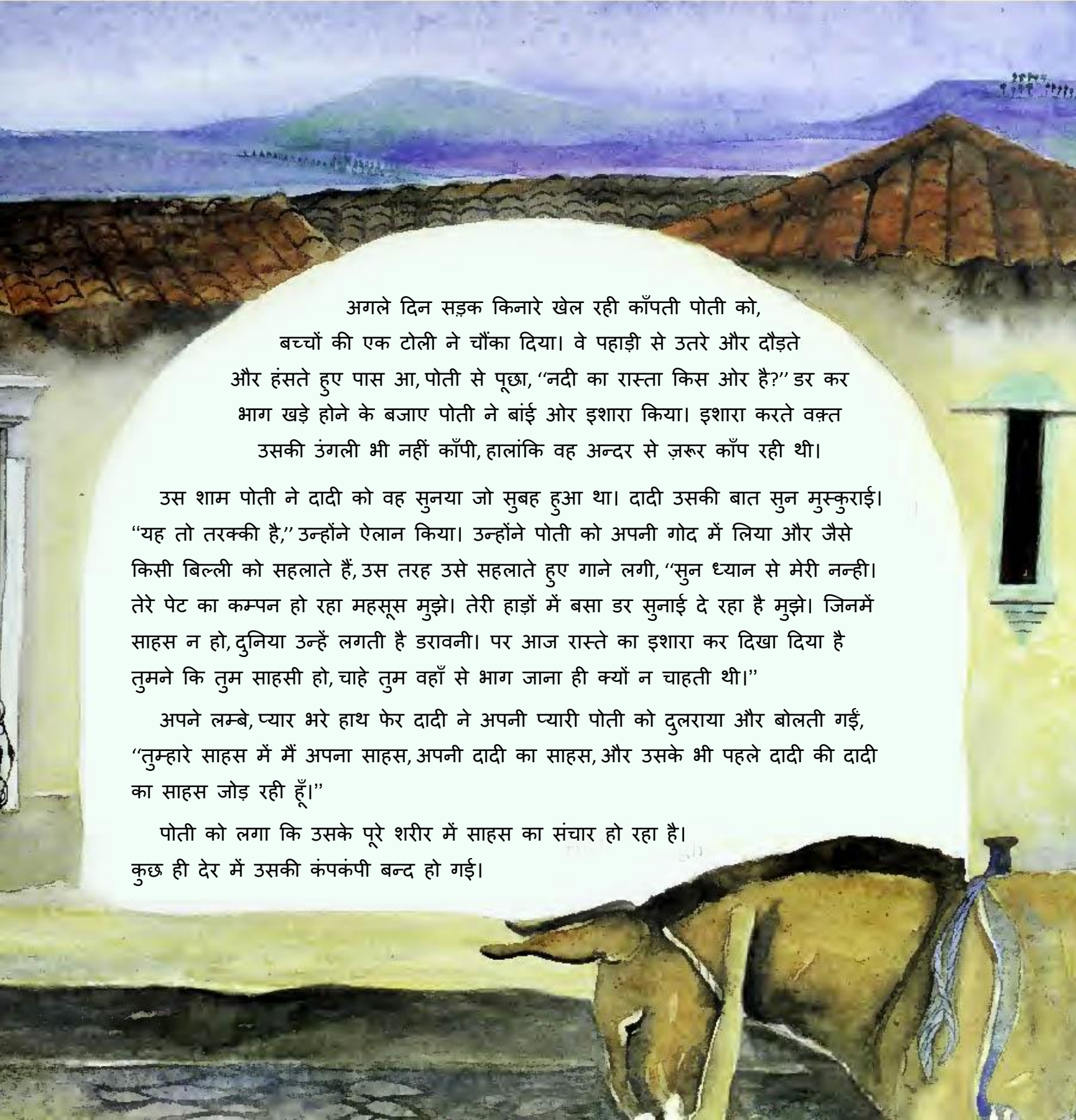
जब दादी ने दरवाज़ा खुलने की आहट सुनी, वह दौड़ी और उसने अपनी सहमी हुई पोती को बाँहों में उठा गले से लिपटा लिया। तब उसे अपनी बड़ी-सी गोद में बैठाया और हल्के हाथों से उसे सहलाते हुए गाने लगी, "ओ मेरी नन्ही, तेरे छोटे-से दिल की धड़कन हो रही महसूस मुझे, और तेरे पेट का कम्पन भी। तेरी हाड़ों में बसा भय दे रहा है मुझे सुनाई।"

वे पोती को सहलाती-दुलराती गाती गईं, "यह दुनिया एक डरावनी जगह है, खास तौर से उनके लिए जो भरोसा नहीं कर पाते। यों सहला-दुलरा कर मैं तुममें अपना विश्वास, अपनी दादी का, और उसके भी पहले दादी की दादी का विश्वास भर रही हूँ।"

पोती को अपने शरीर में गरमाहट भरती महसूस हुई। और जैसे-जैसे सूरज घर के पिछवाड़े ढ़लता गया, उसके शरीर का थरथराना कम हुआ और उसे नींद आ गई।
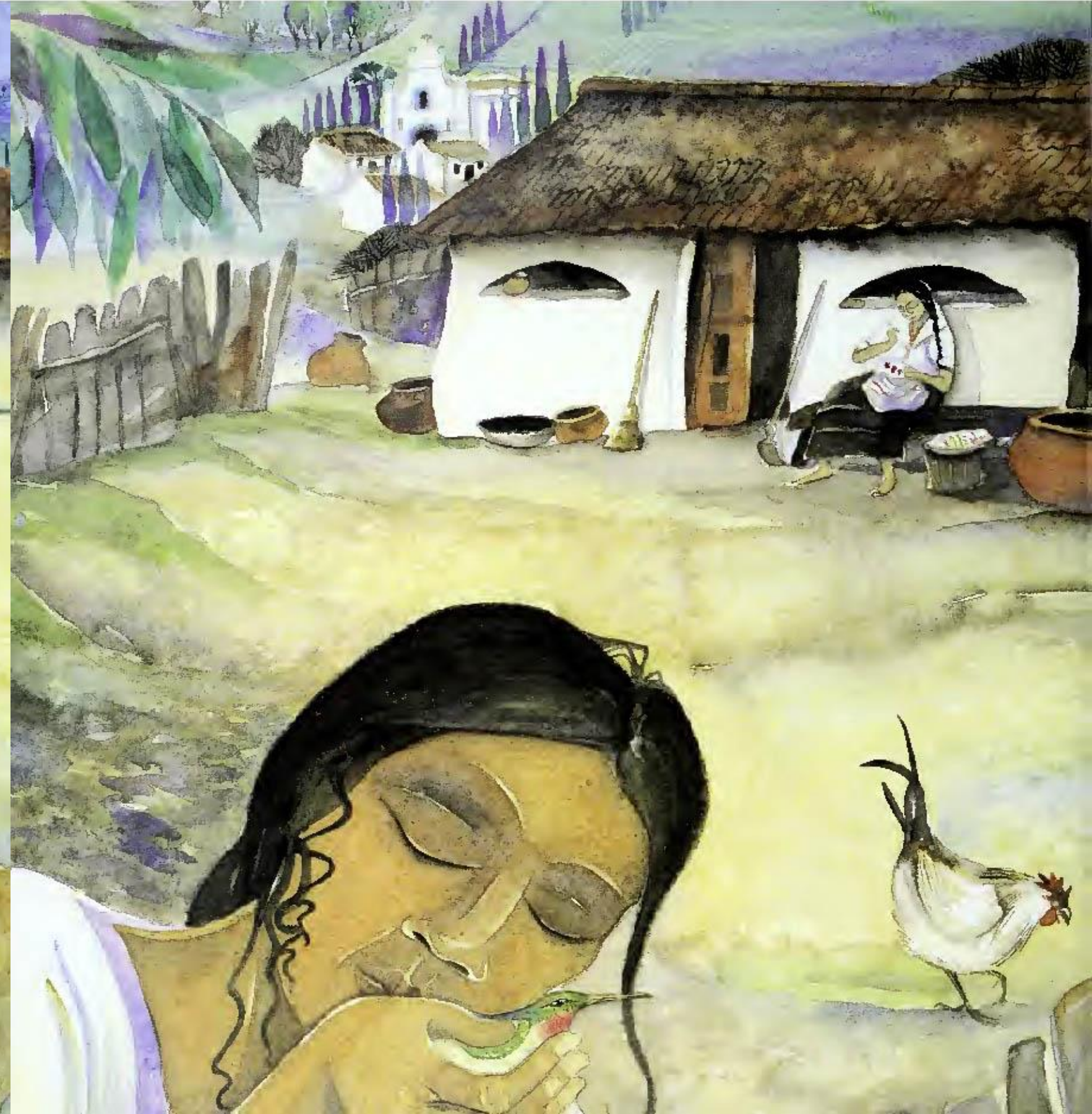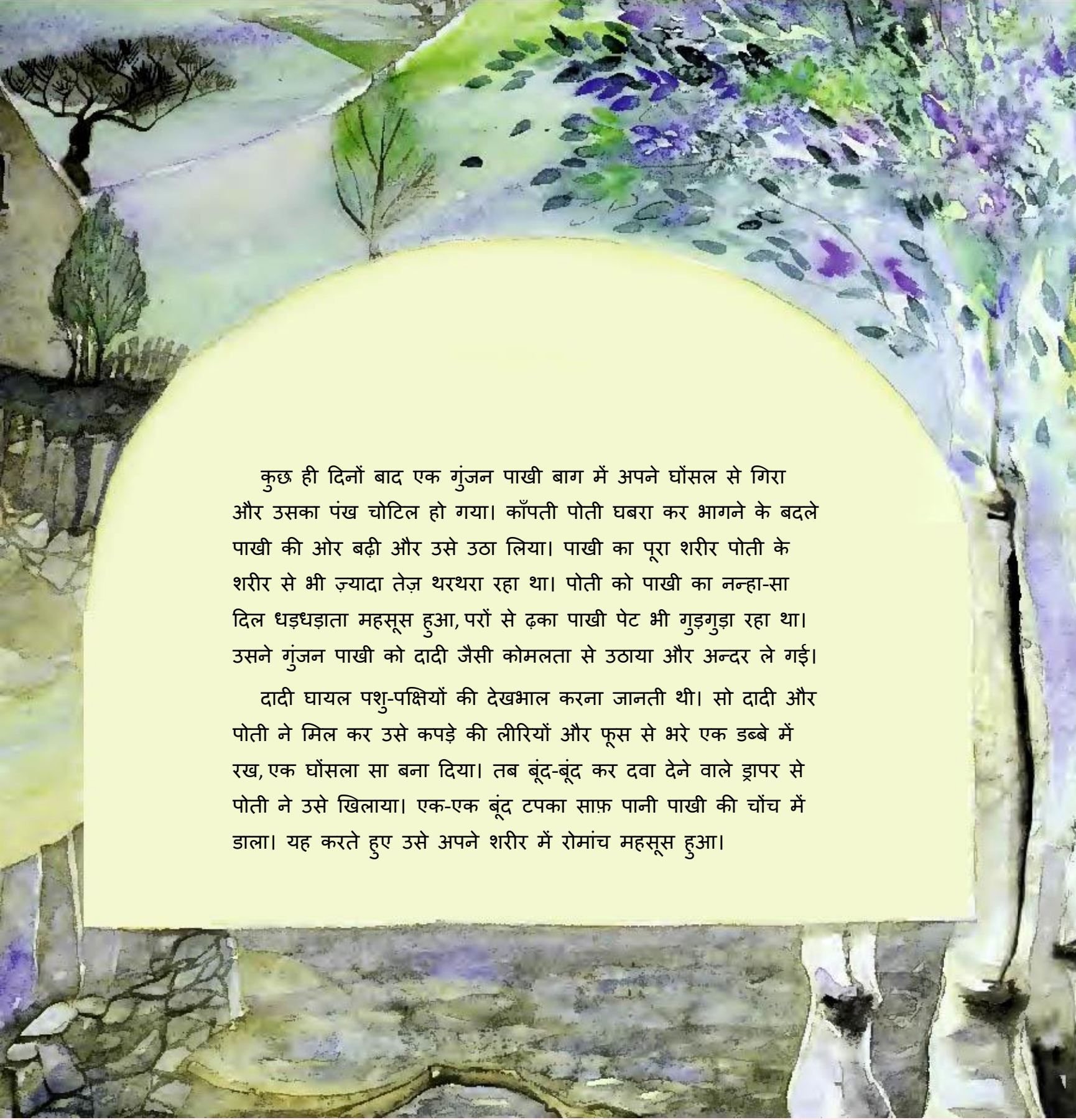
अगले दिन सड़क किनारे खेल रही काँपती पोती को, बच्चों की एक टोली ने चौंका दिया। वे पहाड़ी से उतरे और दौड़ते और हंसते हुए पास आ, पोती से पूछा, "नदी का रास्ता किस ओर है?" डर कर भाग खड़े होने के बजाए पोती ने बांई ओर इशारा किया। इशारा करते वक़्त उसकी उंगली भी नहीं काँपी, हालांकि वह अन्दर से ज़रूर काँप रही थी।

उस शाम पोती ने दादी को वह सुनया जो सुबह हुआ था। दादी उसकी बात सुन मुस्कुराई। "यह तो तरक्की है," उन्होंने ऐलान किया। उन्होंने पोती को अपनी गोद में लिया और जैसे किसी बिल्ली को सहलाते हैं, उस तरह उसे सहलाते हुए गाने लगी, "सुन ध्यान से मेरी नन्ही। तेरे पेट का कम्पन हो रहा महसूस मुझे। तेरी हाड़ों में बसा डर सुनाई दे रहा है मुझे। जिनमें साहस न हो, दुनिया उन्हें लगती है डरावनी। पर आज रास्ते का इशारा कर दिखा दिया है तुमने कि तुम साहसी हो, चाहे तुम वहाँ से भाग जाना ही क्यों न चाहती थी।"

अपने लम्बे, प्यार भरे हाथ फेर दादी ने अपनी प्यारी पोती को दुलराया और बोलती गईं, "तुम्हारे साहस में मैं अपना साहस, अपनी दादी का साहस, और उसके भी पहले दादी की दादी का साहस जोड़ रही हूँ।"

पोती को लगा कि उसके पूरे शरीर में साहस का संचार हो रहा है। कुछ ही देर में उसकी कंपकंपी बन्द हो गई।
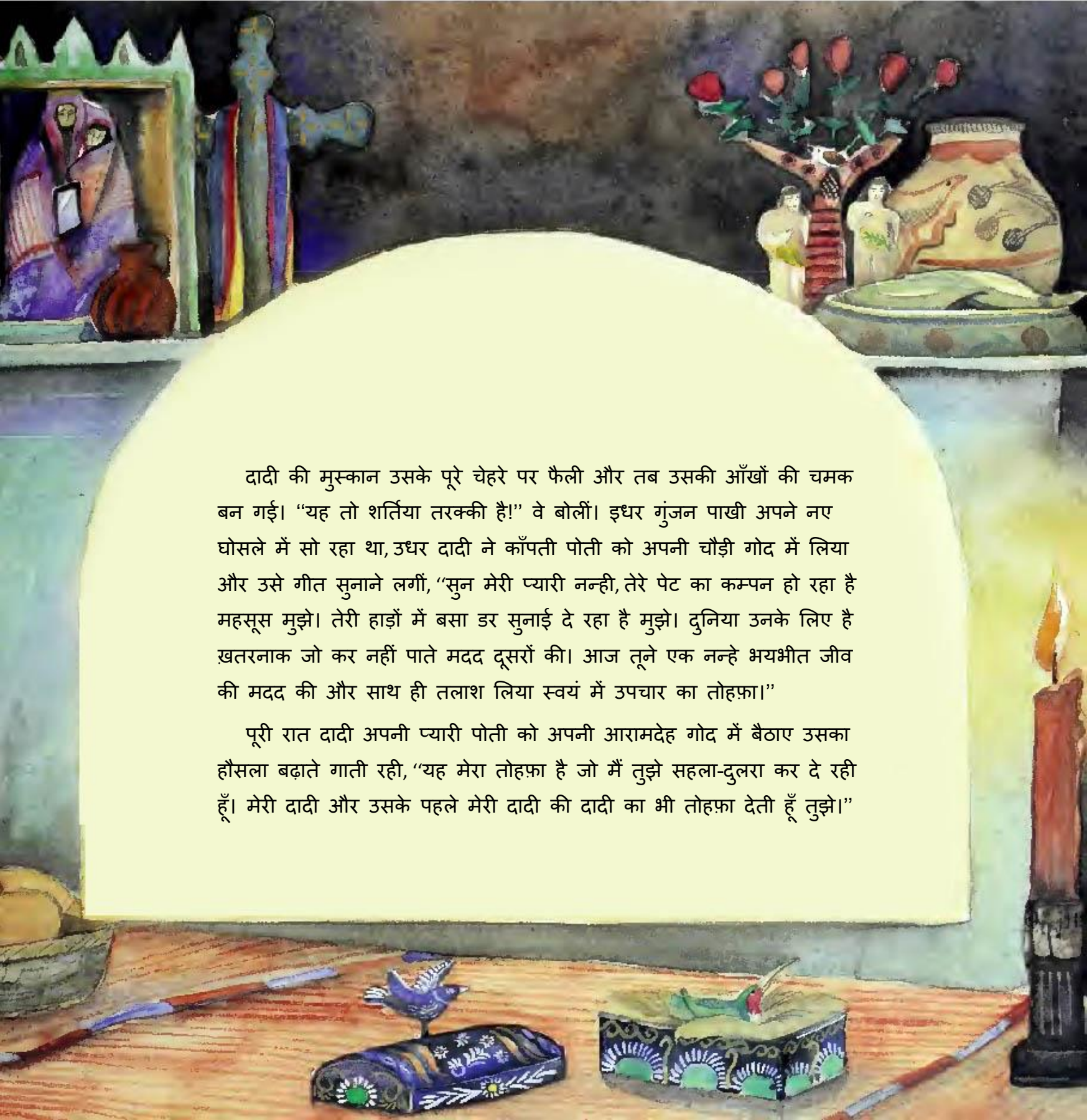
कुछ ही दिनों बाद एक गुंजन पाखी बाग में अपने घोंसल से गिरा और उसका पंख चोटिल हो गया। काँपती पोती घबरा कर भागने के बदले पाखी की ओर बढ़ी और उसे उठा लिया। पाखी का पूरा शरीर पोती के शरीर से भी ज़्यादा तेज़ थरथरा रहा था। पोती को पाखी का नन्हा-सा दिल धड़धड़ाता महसूस हुआ, परों से ढ़का पाखी पेट भी गुड़गुड़ा रहा था। उसने गुंजन पाखी को दादी जैसी कोमलता से उठाया और अन्दर ले गई।

दादी घायल पशु-पक्षियों की देखभाल करना जानती थी। सो दादी और पोती ने मिल कर उसे कपड़े की लीरियों और फूस से भरे एक डब्बे में रख, एक घोंसला सा बना दिया। तब बूंद-बूंद कर दवा देने वाले ड्रापर से पोती ने उसे खिलाया। एक-एक बूंद टपका साफ़ पानी पाखी की चोंच में डाला। यह करते हुए उसे अपने शरीर में रोमांच महसूस हुआ।
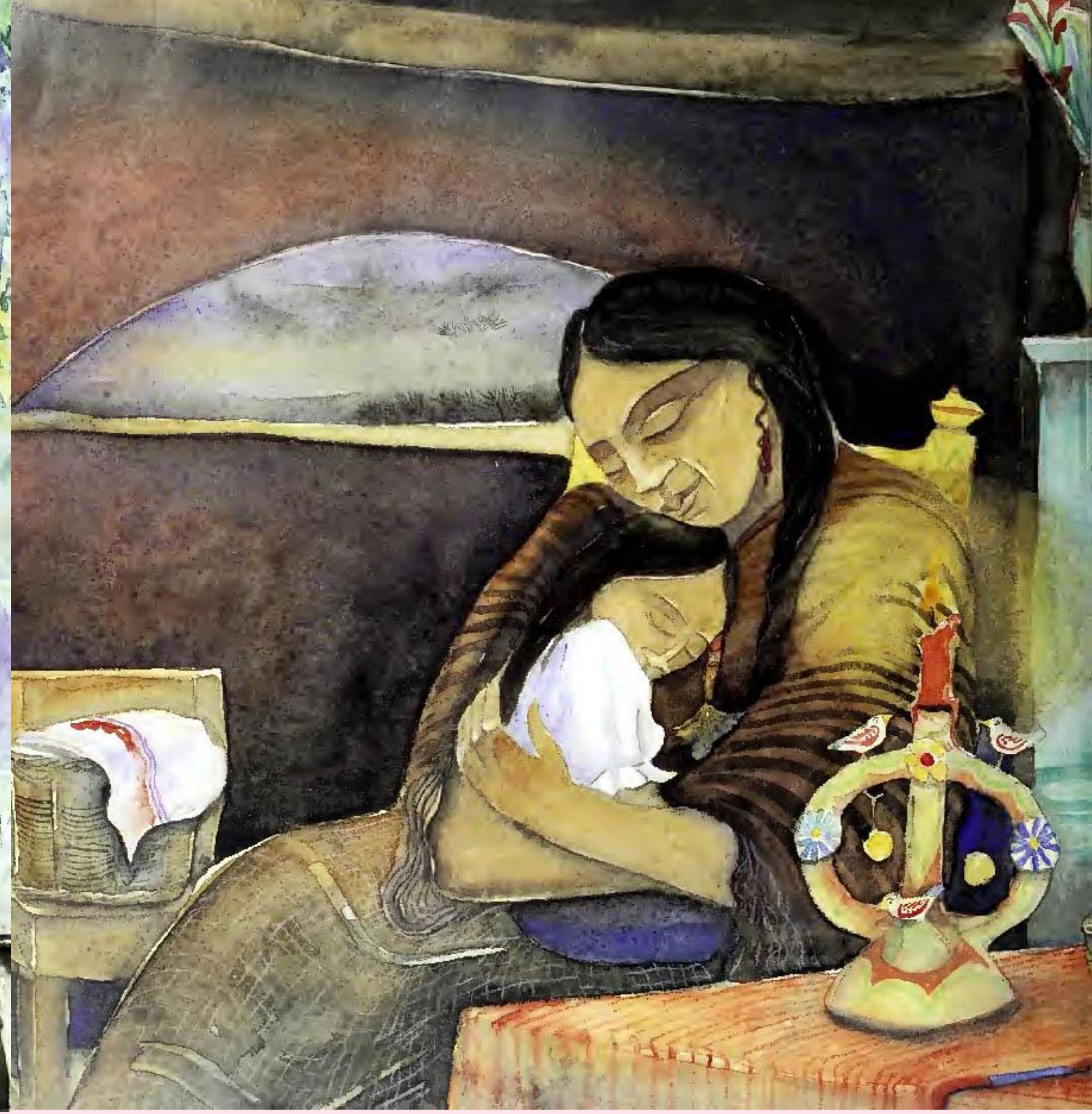
दादी की मुस्कान उसके पूरे चेहरे पर फैली और तब उसकी आँखों की चमक बन गई। "यह तो शर्तिया तरक्की है!" वे बोलीं। इधर गुंजन पाखी अपने नए घोसले में सो रहा था, उधर दादी ने काँपती पोती को अपनी चौड़ी गोद में लिया और उसे गीत सुनाने लगीं, "सुन मेरी प्यारी नन्ही, तेरे पेट का कम्पन हो रहा है महसूस मुझे। तेरी हाड़ों में बसा डर सुनाई दे रहा है मुझे। दुनिया उनके लिए है ख़तरनाक जो कर नहीं पाते मदद दूसरों की। आज तूने एक नन्हे भयभीत जीव की मदद की और साथ ही तलाश लिया स्वयं में उपचार का तोहफ़ा।"

पूरी रात दादी अपनी प्यारी पोती को अपनी आरामदेह गोद में बैठाए उसका हौसला बढ़ाते गाती रही, "यह मेरा तोहफ़ा है जो मैं तुझे सहला-दुलरा कर दे रही हूँ। मेरी दादी और उसके पहले मेरी दादी की दादी का भी तोहफ़ा देती हूँ तुझे।"
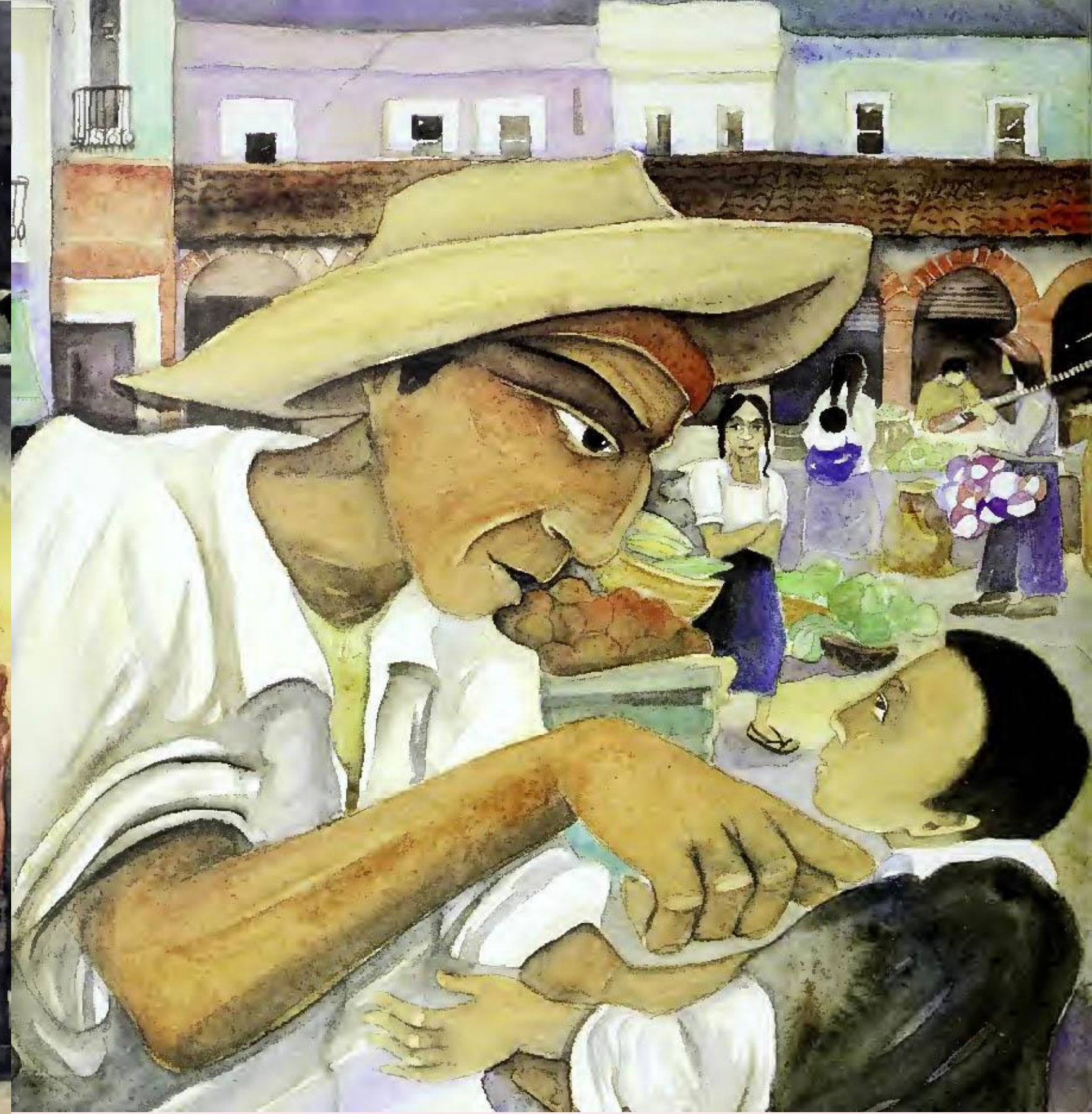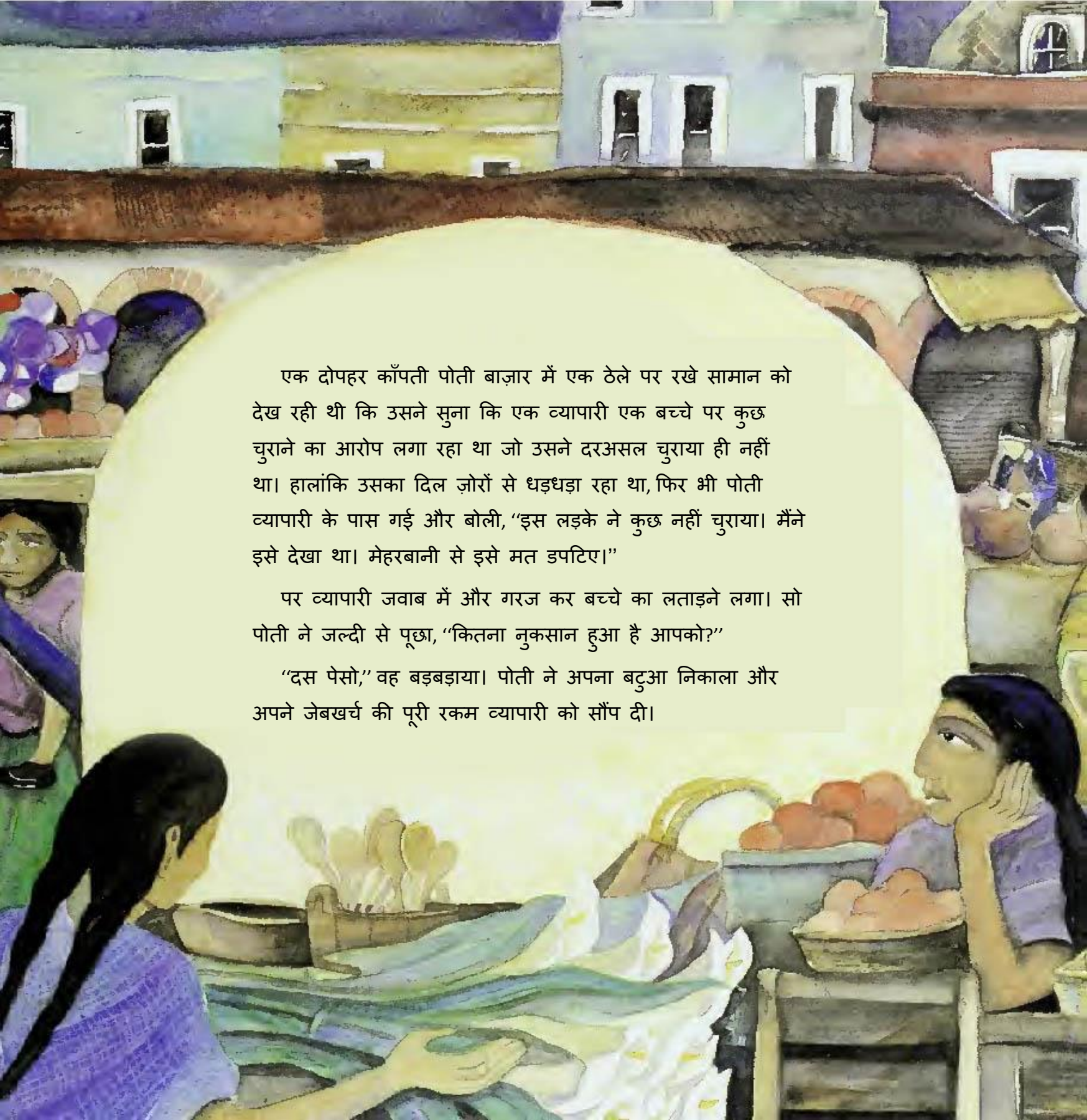
एक दोपहर काँपती पोती बाज़ार में एक ठेले पर रखे सामान को देख रही थी कि उसने सुना कि एक व्यापारी एक बच्चे पर कुछ चुराने का आरोप लगा रहा था जो उसने दरअसल चुराया ही नहीं था। हालांकि उसका दिल ज़ोरों से धड़धड़ा रहा था, फिर भी पोती व्यापारी के पास गई और बोली, ''इस लड़के ने कुछ नहीं चुराया। मैंने इसे देखा था। मेहरबानी से इसे मत डपटिए।''

पर व्यापारी जवाब में और गरज कर बच्चे का लताड़ने लगा। सो पोती ने जल्दी से पूछा, ''कितना नुकसान हुआ है आपको?''

''दस पेसो,'' वह बड़बड़ाया। पोती ने अपना बटुआ निकाला और अपने जेबखर्च की पूरी रकम व्यापारी को सौंप दी।

"यह तो सचमें भारी तरक्की है!" दादी ने काँपती पोती की कहानी को सुन कहा, जो उसने घर दौड़ कर आने के बाद हाँफते हुए दादी को सुनाई थी।

तब दादी ने उसे अपनी चैड़ी गोदी में लिया और उसे देर तक सहलाती-दुलराती रहीं। "मेरी नन्ही, अच्छे से सुनो," उन्होंने गाया। यह दुनिया उनके लिए डरावनी जगह है जिनका आत्म-सम्मान ही न हो। आज तुमने आत्म-सम्मान तब दिखाया जब तुम धरती और आसमान के बीच तन कर खड़ी हुई। उस आत्म-सम्मान के साथ मैं अपना आत्म-सम्मान भी जोड़ती हूँ जो मुझे दिया गया था, और अपनी दादी और उसके पहले दादी की दादी का आत्म-सम्मान भी।"

काँपती पोती को लगा कि गर्व का एक अजीब सा भाव उसमें भर रहा है। उसे लगा कि वह हमेशा से ज़्यादा बड़ी और ताकतवर हो गई है। उसका चेहरा जीवन्त हो जोश से गर्म हो उठा।
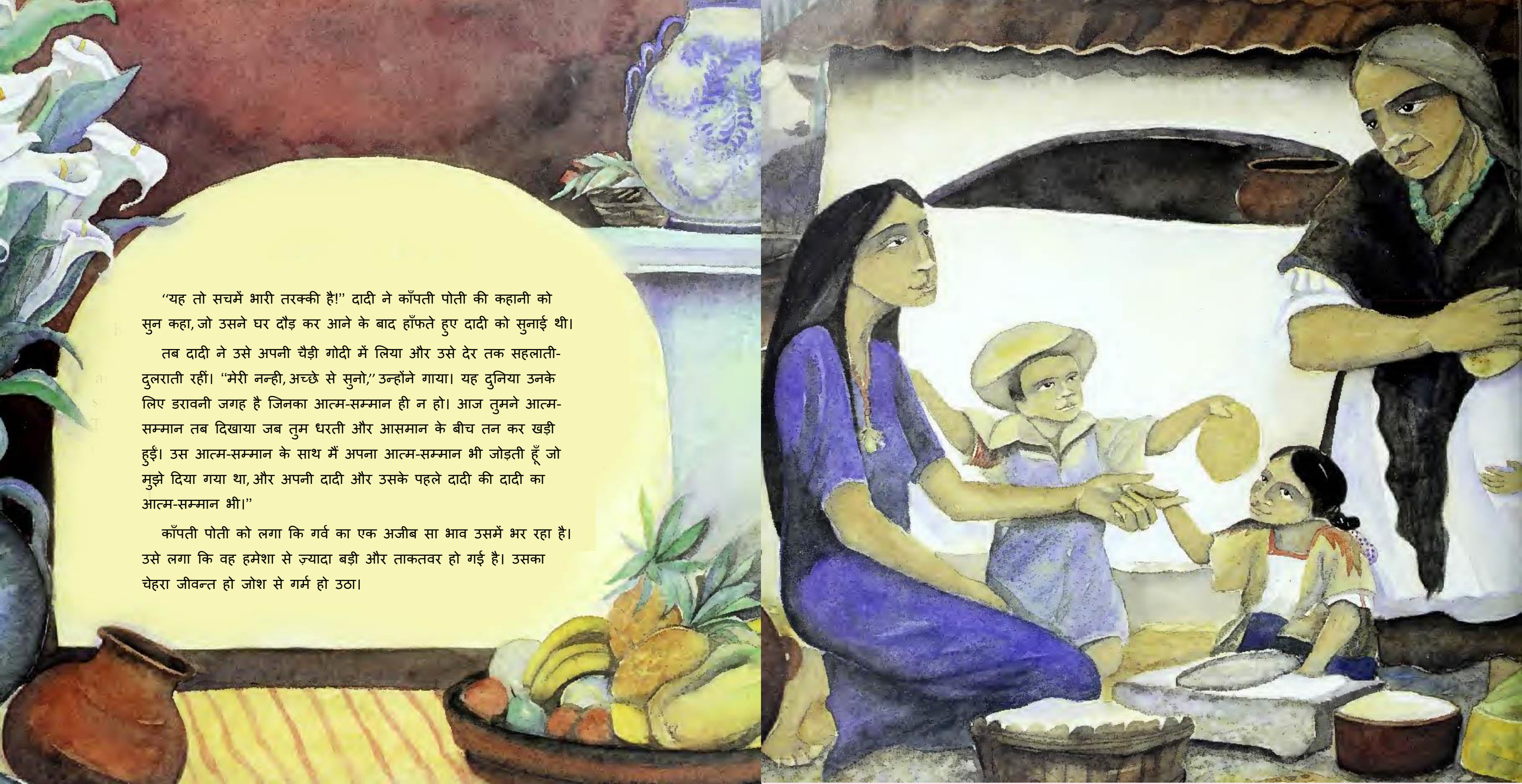
दादी ने कितनी बार पोती को दुलार किया, उसे सहलाया? कितनी बार उसके लिए हौसला-अफ़ज़ाई का गीत गाया? मुझे मालूम नहीं। पर इतना पता है कि ऐसा उन्होंने कई-कई बार, कई-कई सप्ताहों, और कई-कई बरसों तक किया होगा। उन्होंने अपनी काँपती-लरजती पोती में सहला-सहला कर विश्वास, साहस, कौशल और आत्म-सम्मान भरा। दादी के गीत पोती में इतने गहरे उतरे कि उसके माँस में, माँसपेशियों में, उसके खून में, उसके दिल में और अंत-तंत उसकी हड्डियों तक में बस गए।

समय के साथ पोती एक भरोसा करने वाली और भरोसेमन्द, उदार और दयालु युवती में बदली। किसीको अब यह याद तक नहीं था कि किसी समय वह एक आर्मेडिलो तक से डर कर भागी थी। जल्द ही वह आत्म-विश्वास से भरी, हंसती-मुस्कुराती, और इर्द-गिर्द जो कुछ भी था उसीमें खुश रहने वाली स्त्री में तब्दील हो गई।

अब पोती के खुद के भी बच्चे थे, फिर भी वह कई बार अपना सिर दादी की गोद में रख देती। वह दादी के हाथों की भाषा बखूबी समझती थी। सो बूढ़ी दादी की उंगलियाँ पोती के शरीर पर जाने-पहचाने रास्ते बनातीं, और पोती मुस्कुरा कर आँखें भींच लेती।
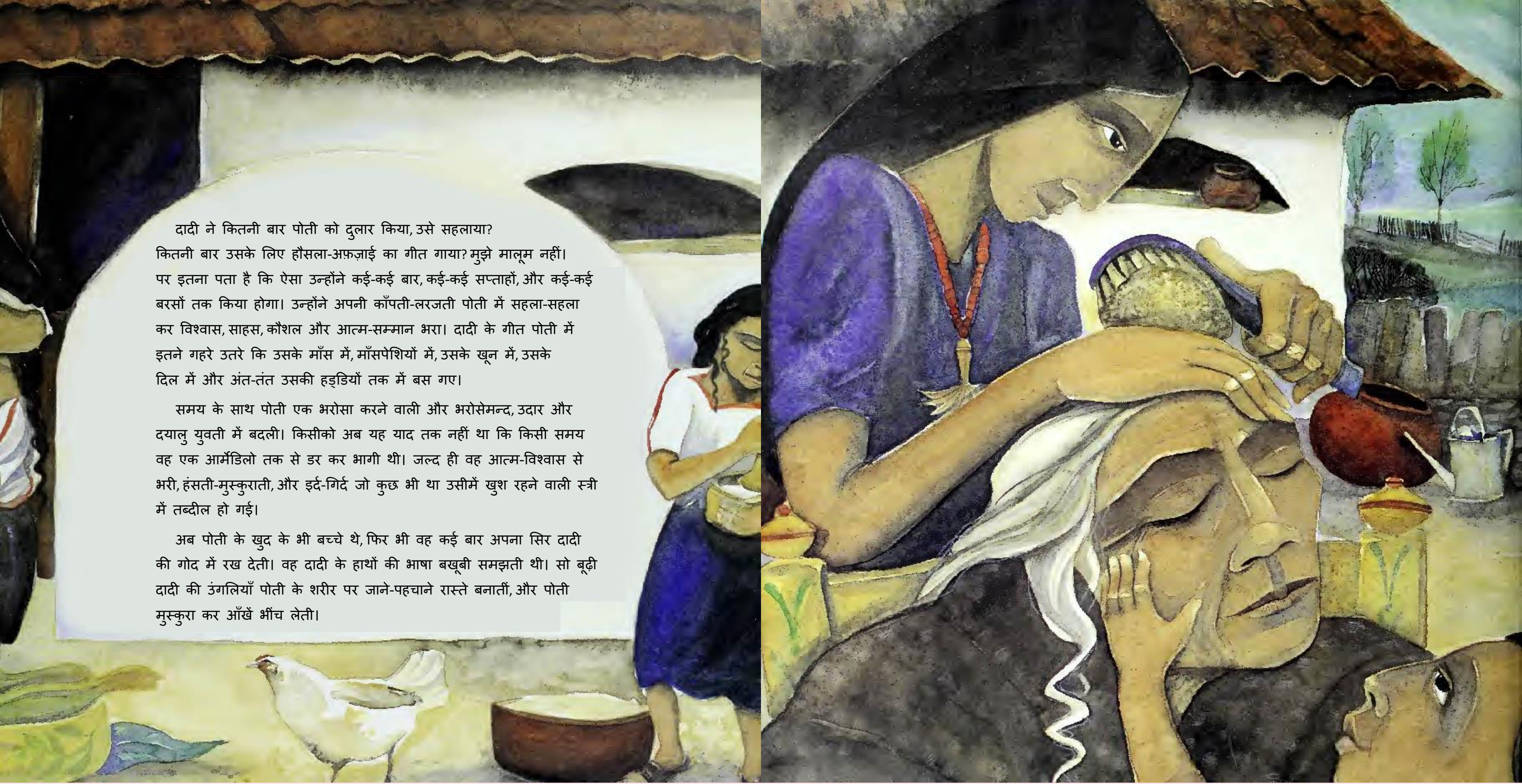
धीरे-धीरे दादी बूढ़ी ओर कमज़ोर होती गईं। सो पोती उनको संभालने लगी। वह सुबह पौ फटते ही आती, चूल्हा जला, चाय का पानी उबालती। उनके लिए खाना पकाती। उनके मुलायम बालों को धोती और संवारती। उनके थके-मांदे पैरों की मालिश करती, एक-एक उंगली को रगड़ती। दादी के प्यार करने वाले हाथों को ले उनकी उंगलियाँ सहलाती। कभी-कभार, पर अब बिरले ही, दादी और पोती गाँव में टहलने निकलते। वादियों से लेकर पहाड़ तक वे साथ-साथ हंसते-गाते चलते। जब ज़मीन ऊबड़-खाबड़ होती पोती दादी को अपनी बाँहों का सहारा देती।
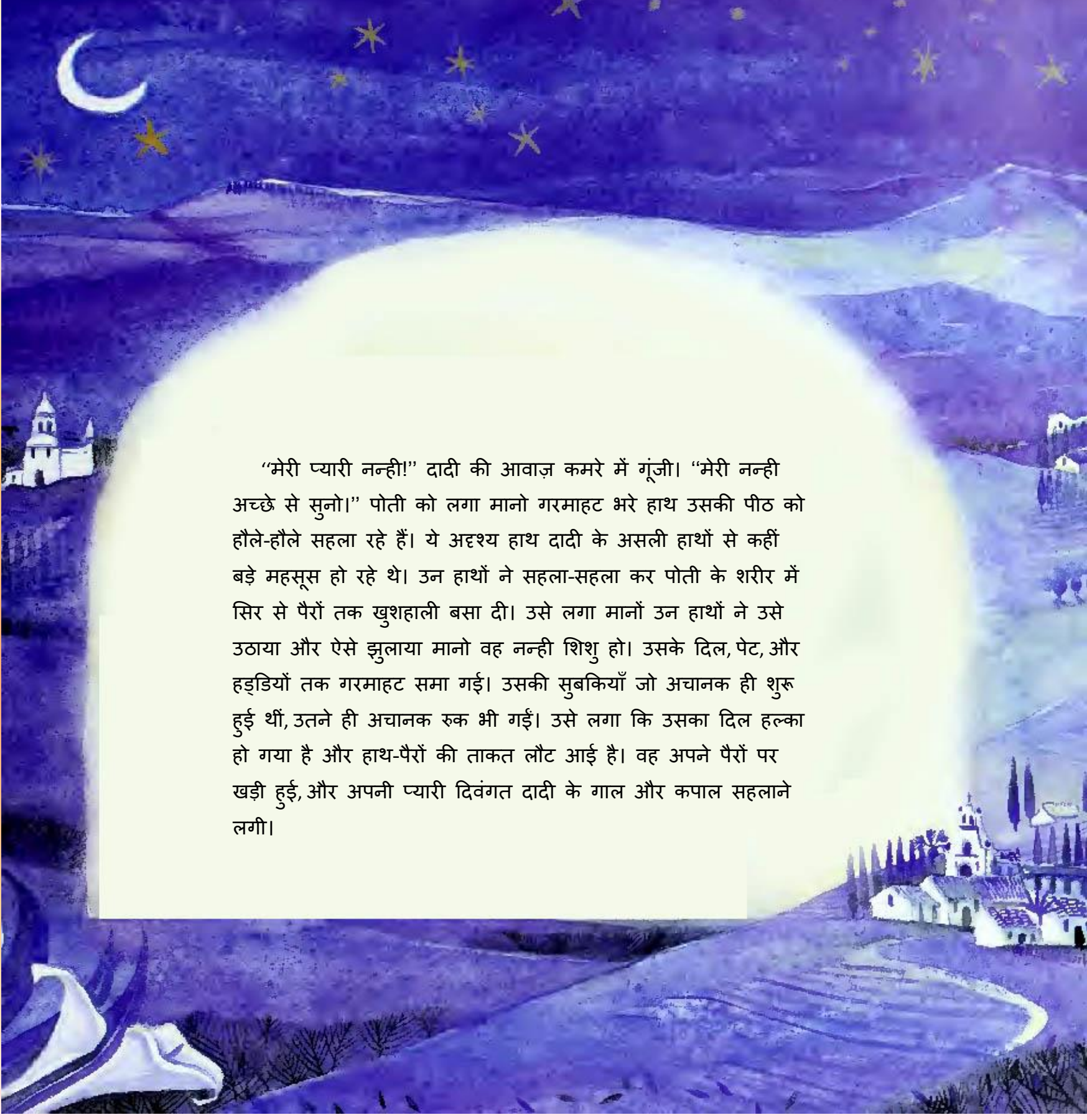
एक रात पोती ने सपने में दादी को अकेले ही पहाड़ पर चढ़ते देखा। वह दादी के साथ चलना चाहती थी, पर दादी मुड़ीं और अपना हाथ उठा उसे रोका। "मुझे अकेले ही जाना है," आँखों में शान्त मुस्कुराहट लिए उन्होंने कहा।

अगली सुबह पोती हमेशा की तरह दादी के घर पहुँची। पर जब वह दादी को जगाने गई तो पाया कि दादी का शरीर ठण्डा पड़ चुका है और उनके चेहरे से चिन्ता की सारी लकीरें मिट चुकी हैं।

पोती घुटनों के बल गिरी। जिस तेज़ी से बिजली गिरती है उसी फुर्ती से शोक ने उस पर धावा बोला।

उसे लगा कि उसका दिल ज़ोरों से धड़धड़ा रहा है और पेट में उथल-पुथल मची है, ठीक वैसे जैसे बचपन में हुआ करता था। वह सर से लेकर पैरों की उंगलियों तक थर्रा उठी, जैसे देवदार की शाखाएं तूफ़ान में हिलती हैं। अपनी प्यारी दादी के बिना वह कैसे जिएगी? उसका दिल नदी की तरह खुल गया और आँसुओं ने उसके चेहरे को भिगा दिया और तब उसके छाती पर टपकने लगे। वह दुख से दोहरी हो गई। उसकी सिसकियाँ पेट और हड्डियों से उठ-उठ कर निकलने लगीं।

“मेरी प्यारी नन्ही!” दादी की आवाज़ कमरे में गूंजी। “मेरी नन्ही अच्छे से सुनो।” पोती को लगा मानो गरमाहट भरे हाथ उसकी पीठ को हौले-हौले सहला रहे हैं। ये अदृश्य हाथ दादी के असली हाथों से कहीं बड़े महसूस हो रहे थे। उन हाथों ने सहला-सहला कर पोती के शरीर में सिर से पैरों तक खुशहाली बसा दी। उसे लगा मानों उन हाथों ने उसे उठाया और ऐसे झुलाया मानो वह नन्ही शिशु हो। उसके दिल, पेट, और हड्डियों तक गरमाहट समा गई। उसकी सुबकियाँ जो अचानक ही शुरू हुई थीं, उतने ही अचानक रुक भी गई। उसे लगा कि उसका दिल हल्का हो गया है और हाथ-पैरों की ताकत लौट आई है। वह अपने पैरों पर खड़ी हुई, और अपनी प्यारी दिवंगत दादी के गाल और कपाल सहलाने लगी।

अब पोती भी कई बच्चों की दादी है। उसने अपने बच्चों और नाती-पोतियां को अपनी चैड़ी गोद में बैठाया है। अपने मज़बूत और कुशल हाथों में उन्हें झुलाया है। वह उनके साथ हंसी और रोई है, और कानों फुसफुसाया है, "सुनो मेरे नन्हों, अच्छे से सुनो। दादी की आत्मा हमारे चारों ओर है। वह हवा में और पेड़ों में है। वह वादियों और पहाड़ों में है। दादी की आत्मा के हाथ नदी में मछलियों के साथ खेलते हैं, अलाव में आग सुलगाते हैं। वह हमेशा वहाँ मौजूद होती है जब हम अपने अज़ीज़ दोस्तों के साथ स्वादिष्ट खाना खाते हैं, दिल खोल हंसते हैं, या नमकीन आँसू बहाते हैं। हम जहाँ कहीं भी क्यों न हो वह हमसे बहुत दूर नहीं होती। हमें जब भी ज़रूरत पड़े सिर्फ अपनी आँखें बन्द कर यह महसूस कर सकते हैं कि वह हमें चिपटाए हुए है।"

दादी का स्पर्श

यह कहानी स्पर्श की शक्ति और जीवन की निरंतरता का जश्न मनाती है। जब दादी/नानी अपने पोती/नाती का स्पर्श करती हैं वे उसी स्पर्श के सहारे उन्हें पीढ़ियों का प्यार और ज्ञान देती हैं। जब हम अपने बच्चों को छूते हैं, चाहे हमारी आवाज़ से, शब्दों से, नज़र से, या जिस तरह से हम उसे पकडते या सहलाते हैं उससे, हम उन पर अतीत और भविष्य की छाप लगाते हैं। हमारे स्पर्श में वह स्पर्श भी शामिल होता है जिससे बचपन में हमें छुआ गया था। हम पिछली पीढ़ियों के संदेश और मूल्य अगली पीढ़ी तक ले जाते हैं। हमारे बच्चों के शरीर की कोशिकाएं हमारे संदेश को आजीवन वहन करती हैं। सो जब वे बच्चे बड़े हो वयस्क बनते हैं उनकी खुशहाली और आत्म-सम्मान का भाव उन्हीं ऐंद्रिक संदेशों से गढ़ा जाता है जो हमने उन्हें दिए हैं। और वे इन संदेशों को बाद में अपने बच्चों तक पहुँचाते हैं।

जब दादी या नानी सुनती हैं, वे अपने पोते-नाती के डर को नीचे हड्डियों तक सुन पाती हैं। बच्चों को तभी तो यह पता चलता है कि उनकी बात ठीक से सुनी जा रही है, उनका सम्मान किया जा रहा है, जो बच्चों की ज़रूरत होती है। जब उन्हें इस तरह सुना जाता है वे भी यह सीखते हैं कि उनकी हड्डियों में क्या है। वे अपने पूर्वजों के तोहफ़े को समझने लगते हैं। इससे वे अपनी और दूसरों की ज़रूरतों को सुनना सीखते हैं। वे ससम्मान दूसरों से मांग सकते हैं और उन्हें दे भी सकते हैं। जब हम अपने बच्चों का ध्यान और सरोकार के साथ स्पर्श करते हैं, और उनकी चेतन और अवचेतन आवश्यकताओं और कामनाओं को सुनते हैं, हम उन्हें सबसे पवित्र उपहार देते हैं। वे ब्रह्माण्ड में अपना स्थान पहचानना सीखते हैं। हम न केवल उनको इस तरह पोषित करते हैं कि वे अपना जीवन सम्मान के साथ जी सकें, बल्की हम आगे आने वाली अनेक पीढ़ियों के भावनात्मक जल को भी पोषित करते हैं। इस प्रकार छोटी तरंगें विशाल लहरें बन जाती हैं।

मैक्सिको के लोगों के लिए यह विचार केवल काल्पनिक नहीं है कि पिछली पीढ़ियों की आत्माएं न केवल वर्तमान बल्की भावी पीढ़ियों की भी रक्षा और पोषण करती हैं। यह विचार वहाँ गहराई से महसूस किया और स्वीकारा जाता है। मैक्सिकी लोग मानते हैं कि मृत लोगों की आत्माएं हमेशा हमारे आस-पास होती हैं। जब किसी रिश्तेदार या दोस्त की मौत होती है, उनको प्यार करने वालों को शोक और खो देने का भाव घेरता ज़रूर है। पर उन्हें पता होता है कि वे उनसे बहुत दूर नहीं हैं। जीवित लोगों की दुनिया और मृतकों की दुनिया को एक झीन-सा परदा ही तो अलग करता है। लोग अक्सर अपने मृत रिश्तेदारों और मित्रों से बिना बोले ही आंतरिक सहजता से बातचीत कर पाते हैं। वे अपने दैनिक जीवन में मृत व्यक्तियों की आत्मा को न केवल महसूस कर पाते हैं बल्की कभी तो देख और सुन भी पाते हैं। उनका अपने पूर्वजों से इतना गहरा जुड़ाव होता है कि वे हर वर्ष मृतकों का दिवस मनाते हैं ताकि वे जीवन, मृत्यु, और आत्मा के शाश्वत जीवन का उत्सव मना सकें।

यह कहानी मैक्सिको के लोगों के इस विश्वास का सम्मान करती है कि आत्मा व्यक्ति की मृत्यु के बाद जीवित रहती है। यह देशज लोगों का भी सम्मान करती है, इस मायने में कि दादी/नानी की उपस्थिति उनकी मृत्यु के बाद भी बनी रहती है। केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, वरन प्रकृति के सार के रूप में

- बारबरा सोरोस